भारत और आर्कटिक: ध्रुवीय विज्ञान से जलवायु सुरक्षा तक

समाचार संदर्भ: 9 अगस्त 2026 | ध्रुवीय क्षेत्र • जलवायु कूटनीति | GS-II व III

आर्कटिक भारत से दूर है, लेकिन वैश्विक जलवायु और समुद्री पर्यावरण से उसका संबंध उसे भारत के लिए महत्वपूर्ण बनाता है। भारत की भूमिका केवल संभावित नए समुद्री मार्ग या संसाधन खोजने की नहीं, बल्कि वैज्ञानिक समझ, पर्यावरण संरक्षण और अंतरराष्ट्रीय सहयोग बढ़ाने की भी है।

खबरों में क्यों

9 अगस्त 2026 को पहली बार प्रकाशित एक विशेषज्ञ विश्लेषण में आर्कटिक में भारत की भूमिका और क्षमता पर संसदीय समिति की समीक्षा के संदर्भ में चर्चा हुई। यह 2022 की आर्कटिक नीति से आगे उसके क्रियान्वयन का प्रश्न है। नीति का होना, किसी नई सिफारिश का आना और उसके लिए वास्तविक क्षमता बनना अलग चरण हैं।

आर्कटिक क्या है और भारत क्यों जुड़ा है?

आर्कटिक उत्तरी ध्रुव के आसपास का व्यापक क्षेत्र है, जिसमें समुद्र, द्वीप, तटीय भूभाग और अलग पारिस्थितिक तंत्र शामिल हैं। यह दक्षिणी ध्रुव के अंटार्कटिका से अलग है। भारत ध्रुवीय विज्ञान और पर्यावरणीय परिवर्तन की समझ बढ़ाने के लिए इस क्षेत्र से जुड़ा है; वैज्ञानिक उपस्थिति से किसी अन्य देश के भूभाग या संसाधनों पर स्वामित्व नहीं मिल जाता।

मुख्य तथ्य

मौजूदा नीति: भारत की आर्कटिक नीति 2022 विज्ञान, जलवायु व पर्यावरण, आर्थिक व मानव विकास, परिवहन, शासन व सहयोग और राष्ट्रीय क्षमता निर्माण को जोड़ती है। यह केवल संसाधन दोहन की योजना नहीं है।

वैज्ञानिक उपस्थिति: नीति दस्तावेज भारत के हिमाद्रि अनुसंधान स्टेशन और ध्रुवीय अनुसंधान सहयोग का उल्लेख करता है। लगातार अवलोकन, प्रशिक्षित विशेषज्ञ और उपयुक्त अनुसंधान साधन विज्ञान को उपयोगी बनाते हैं।

भारत के जलवायु प्रश्न: आर्कटिक परिवर्तन और दूरस्थ मौसम प्रणालियों के संबंधों का अध्ययन भारत के लिए उपयोगी है। ऐसे संबंध जटिल हैं; किसी एक भारतीय बाढ़ या सूखे को केवल आर्कटिक के बदलाव से निश्चित रूप से जोड़ना उचित नहीं।

सहयोग और संरक्षण: क्षेत्रीय शासन, स्थानीय समुदायों के हित और संवेदनशील पर्यावरण को ध्यान में रखकर काम करना होगा। संभावित पहुँच बढ़ना अपने आप सुरक्षित या पर्यावरणीय रूप से स्वीकार्य आर्थिक अवसर नहीं बनता।

जिम्मेदार जलवायु भागीदारी का अलग अंतरराष्ट्रीय संदर्भ जलवायु न्याय वाले लेख में समझें।

नीति को क्षमता में बदलना कठिन क्यों है?

लंबी अवधि का विज्ञान: ध्रुवीय क्षेत्र में एक यात्रा से लंबे रुझान नहीं समझे जा सकते। निरंतर डेटा, समय और संस्थागत स्मृति की जरूरत है।

साधन और समन्वय: समुद्री अनुसंधान, तकनीकी क्षमता और अलग विभागों के बीच समन्वय जरूरी है। लक्ष्य तय होने पर भी संसाधन तथा क्रियान्वयन की जिम्मेदारी स्पष्ट न हो तो अंतर बना रहता है।

भू-राजनीतिक दबाव: बड़े देशों की प्रतिस्पर्धा के बीच वैज्ञानिक सहयोग कठिन हो सकता है। भारत को अपने हित स्पष्ट रखते हुए कानून आधारित सहयोग और पर्यावरणीय जिम्मेदारी में संतुलन बनाना होगा।

विश्लेषण और आगे की राह

भारत को ध्रुवीय विज्ञान, जलवायु जोखिम और कूटनीति के बीच ठोस संबंध बनाना चाहिए। शोध की प्राथमिकताएँ स्पष्ट हों और दीर्घकालिक डेटा भारतीय संस्थानों की क्षमता बढ़ाने में काम आए। अलग मंत्रालयों और वैज्ञानिक निकायों के कार्य समन्वित हों। नई परिवहन या संसाधन संभावनाओं को स्थानीय समाज और पर्यावरण की लागत के साथ परखा जाए। नीति की समीक्षा केवल घोषणाओं की गिनती से नहीं, प्रशिक्षण, अवलोकन की निरंतरता और सहयोग की गुणवत्ता से हो।

अवधारणा में अंतर

समुद्री बर्फ पहले से समुद्र में तैरती है; उसके पिघलने और भूमि की बर्फ का पानी समुद्र में जुड़ने का समुद्र-स्तर पर असर समान नहीं है। दोनों को एक ही प्रक्रिया न मानें। आर्कटिक और अंटार्कटिका की भौगोलिक तथा शासन संबंधी स्थितियाँ भी अलग हैं।

मेंस दृष्टि

जलवायु सुरक्षा का अर्थ केवल सैन्य सुरक्षा नहीं; इसमें आजीविका, संसाधन, वैज्ञानिक समझ और संस्थागत तैयारी भी आती है। दूरस्थ क्षेत्र के महत्व को भारत की घरेलू अनुकूलन क्षमता से जोड़ें।

UPSC CSE Mains शैली: मौलिक अभ्यास प्रश्न

भारत की आर्कटिक भागीदारी को वैज्ञानिक अनुसंधान, जलवायु सुरक्षा और अंतरराष्ट्रीय सहयोग के संयुक्त दृष्टिकोण से क्यों देखना चाहिए? क्रियान्वयन की प्रमुख चुनौतियों की चर्चा कीजिए।

(उत्तर 150 शब्दों में दीजिए) | 10 अंक

उत्तर की रूपरेखा

भूमिका में: आर्कटिक दूर होते हुए भी वैश्विक जलवायु और समुद्री पर्यावरण से जुड़ा है। भारत की भागीदारी को संसाधन या परिवहन अवसरों तक सीमित किए बिना विज्ञान, जलवायु जोखिम और जिम्मेदार सहयोग के रूप में देखना चाहिए।

मुख्य भाग में: ध्रुवीय अनुसंधान से दूरस्थ मौसम-संबंधों की समझ बढ़ सकती है, पर किसी भारतीय बाढ़ या सूखे का निश्चित कारण अकेले आर्कटिक को न मानें। हिमाद्रि जैसी उपस्थिति को निरंतर अवलोकन, प्रशिक्षित विशेषज्ञ और उपयुक्त साधन चाहिए। लंबी अवधि के डेटा, विभागीय समन्वय, संसाधन व जिम्मेदारी की स्पष्टता चुनौतियाँ हैं। भू-राजनीतिक प्रतिस्पर्धा के बीच स्थानीय समुदाय और संवेदनशील पर्यावरण का हित भी सुरक्षित रहे।

निष्कर्ष में: शोध-प्राथमिकताएँ और संस्थागत जिम्मेदारियाँ तय कर क्षमता बढ़ाएँ। नीति की सफलता प्रशिक्षण, अवलोकन की निरंतरता और सहयोग की गुणवत्ता से मापें; वैज्ञानिक उपस्थिति स्वामित्व नहीं और बढ़ी पहुँच अपने-आप सुरक्षित आर्थिक अवसर नहीं है।

स्रोत

- Indian Express, पहली प्रकाशन तारीख 9 अगस्त 2026: भारत की आर्कटिक भूमिका पर विशेषज्ञ विश्लेषण

- पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय: भारत की आर्कटिक नीति 2022, आधिकारिक दस्तावेज
- NASA: समुद्री बर्फ और भूमि की बर्फ पिघलने में अंतर

याद रखें: आर्कटिक में उपयोगी भूमिका के लिए वैज्ञानिक उपस्थिति को निरंतर क्षमता और जिम्मेदार सहयोग से जोड़ना जरूरी है।